ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.18, NO.1, JAN-JUNE,2023 /99

बुधुवा पहाड़ी, रोहतास के शैलचित्र

–डॉ0 अनुष्का ओझा
वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा, बिहार

बुधुवा:

बुधुवा गांव रोहतास जनपद के नौहट्टा प्रखण्ड में कैमूर श्रृंखला की पहाड़ी पर स्थित है। यहां तक पंहुचने के लिए अकबरपुर से कच्चे पहाड़ी रास्ते से कथरा, रतनपारा, माधा, तारडीह, होते हुए बुधुवा कला गांव पंहुचा जा सकता है। इस गांव में आदि वासी लोग कच्चे अथवा घास–फूस के मकान में रहते

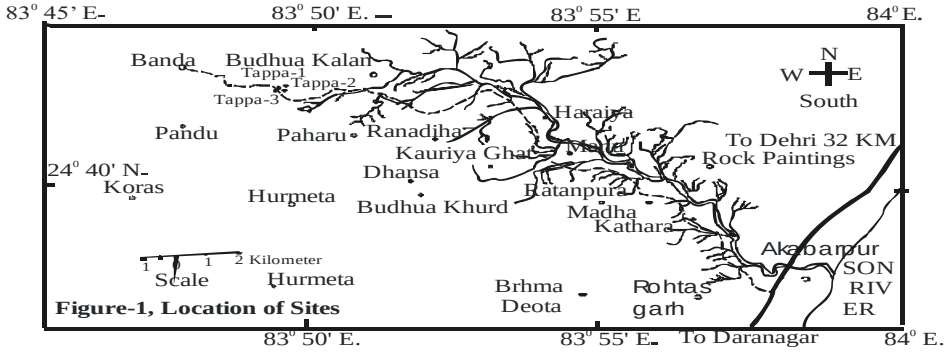

Figure-1, Location of Sites

हैं। गांव से थोड़ा आगे लगभग 500 मीटर की दूरी पर 24^0 42′ 23′′ उत्तरी अक्षांश एवं 83^0 51′ 39′′ पूरबी देशान्तर पर तीन छोटे–छोटे टप्पे (पहाड़ी के छोटे भाग) हैं (रेखाचित्र–1)। इनका शैलाश्रय जैसा आकार है (चित्र–2)। इनकी ऊंचाई समीपवर्ती धरातल से 5 से 10 मीटर तक है[1]। ये टप्पे पठारी भाग में उभरे हुए हैं। इनमें लाल रंग से कुछ शैलचित्र बनाए हुए मिलते हैं[2]। पहले टप्पे की छत पर एक आकृति बनी है।

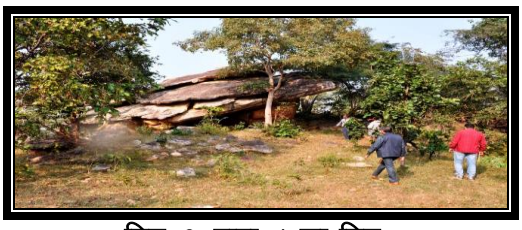

चित्र–2, टप्पा–1 का चित्र

चित्र–3, उड़न खटोला

इनमें चार गोल रेखाओं को वृत्ताकार बना कर उन्हें उड़ती मुद्रा प्रदान करने के लिए त्रिकोणीय रेखाओं द्वारा सजाया गया है (चित्र–3)। ऐसा प्रतीत होता है कि चित्रकार सूर्य को किरणों सहित प्रदर्शित करने का प्रयत्न कर रहा है। कुछ लोग इसे उड़न खटोले का अंकन भी मान सकते हैं। इसके पिछले

चित्र–4,मानवाकृति एवं चन्द्राकृति

चित्र–5, पेड़ों के झुरमुट में चिड़िया

भाग में जो चित्र बने हैं वे काफी धूमिल हो गए हैं और कठिनाई से पहचाने जाते हैं। इनमें दो मानव आकृतियां एक कुत्ते की आकृति तथा एक अर्धचन्द्राकृति मुख्य है (चित्र–4)। यहीं काले रंग से पेड़ों के झुरमुट के बीच में दो चिड़ियां बनाई गई हैं (चित्र–5)।

चित्र–6 टप्पा–2

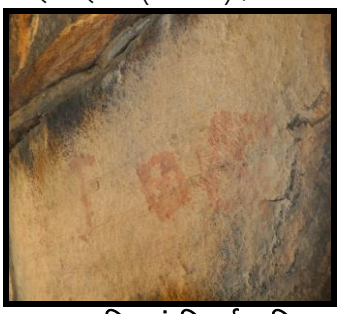

चित्र–7, मानवाकृति एवं विकर्ण सहित वर्ग

चित्र–8, चित्र 7 का समीप से फोटो

दूसरे टप्पे (चित्र–6) में दो रेखीय मानव आकृतियां बनी हैं (चित्र–7, 8) जिन्हें ब्रश से लाल रंग से बनाया गया है। इन दोनों मानव आकृतियों के बीच में एक चतुर्भुज दोनों विकर्णों के साथ बनाया गया है। तीसरा टप्पा जो दूसरे के दाहिने है (चित्र–9,) में अच्छे चित्र सुरक्षित हैं। इसके सामने वाले भाग पर लाल रंग से तीन रखाओं के द्वारा एक ज्यामितिक डिजाइन बनाई गई है (चित्र–10)। इसी प्रकार का दूसरा ज्यामितिक चित्र एक चक्र का है जो गहरे लाल रंग से मोटे ब्रश से बनाया गया है (चित्र–11)। तीसरा चित्र समूह नृत्य का है (चित्र–12) जिसमें चार प्रौढ़ स्त्रियां और दो बच्चे नृत्य करते चित्रित हैं। चित्रकार ने नृत्य की तीब्रता नर्तकियों के उड़ते बालों के द्वारा दिखाने का प्रयत्न किया है कि ये स्त्रियां झूम कर नाच रही हैं। अवश्य ही इनके पास कोई अत्यन्त सुखद प्रसंग रहा होगा। कालक्रम की दृष्टि से ज्यामितिक आकृतियों[3] को ऐतिहासिक काल एवं नृत्य दृश्य को अपेक्षाकृत और प्राचीन माना जा सकता है।

चित्रः 9, सामान्य चित्र–टप्पा 2 एवं टप्पा–3

चित्रः 10, वृत्ताकार ज्यामितिक डिजाइन

चित्र–11, टप्पा–3 पर चक्र आकृति

चित्र–12, समूह नृत्य चित्र

इसी टप्पे की छत पर फूल पत्तियों का सुन्दर चित्र भी बनाया गया है जिसमें केन्द्र में एक आयताकार आकृति है और उसके भीतर तथा बाहर लहरदार रेखाओं द्वारा उसे सजाया गया है (चित्र–13, 14) । इसमें

चित्र–13, टप्पा–3 पर फूल पत्तियों का चित्रण

चित्र–14, चक्र

फूल के स्थान पर कलियां बनाई गई हैं (चित्र–15) तथा प्रत्येक अभिप्राय को बनाने के लिए तीन–तीन रेखाओं का प्रयोग किया गया है। इसी शैली में एक चक्र भी चित्रित है (चित्र–32)।

चित्र–15, चित्र 14 का निकट से अंकन

चित्र–16, शैलाश्रय का सामान्य चित्र

चित्र–17, लाल रंग के चित्र

बुधुवा से वापस लौटते समय सड़क के बांए पार्श्व में 24^0 40′ 03′′ उत्तरी अक्षांश एवं 83^0 55′ 32′′ पूरबी देशान्तर पर मघा गांव के पास एक शैलाश्रय है जिसमें लाल रंग से चित्र बनाए गए हैं (चित्र 16–17)। यहां के चित्र बहुत ही अस्पष्ट हैं बड़ी कठिनाई से इनमें एक मानवाकृति की पहचान की जा सकती है।

बुधुआ के इन टप्पों के पास से कुछ टूटे लधु पाषाणोपकरण भी प्राप्त होते हैं जो प्रायः खण्डित अवस्था में मिलते हैं। इन टप्पों के पास किसी प्राचीन बस्ती के साक्ष्य नहीं प्राप्त हुए। इसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि कम से कम ताम्र पाषाण काल में यायावर या पशु पालक चरवाहे जंगल के इस भाग तक आया करते थे। उन्होंने यहां अपना स्थाई आवास तो नहीं बनाया किन्तु उनकी ऐतिहासिक काल तक की अगली पीढ़ियां भी यहां पशुओं को चराने आती रहीं। खाली समय में इन्हीं पशु चारकों इन टप्पों पर चित्रों को बनाया। कुछ विद्वानों ने ज्यामितिक आकृतियों को प्रारम्भिक ऐतिहासिक काल का माना है[4] किन्तु शैलीगत[5] आधार पर इन चित्रों को ताम्र पाषाण काल से ऐतिहासिक काल के बीच रखा जा सकता है।

संदर्भः

1. इस स्थल के विषय में सूचना डॉ0 श्याम सुन्दर तिवारी जी द्वारा प्राप्त हुई और स्थलीय निरीक्षण में उनके द्वारा प्रदत्त मार्गदर्शन हेतु उनके प्रति आभार।
2. इसी प्रकार के अन्य चित्रों के लिए द्रष्टव्य, तिवारी डी0 पी0 एवं अनुष्का ओझा, कुर्दो पहाणी, सासाराम, बिहार के शैलचित्र, ह्यूमैनिटीज एण्ड डेवलेपमेंट, वाल्यूम 16, पार्ट 1 एवं 2, पृष्ठ 7–9.
3. विश्वास एस0 एस0, रॉक आर्ट ए कैटलाग, इंदिरा गांधी नेशनल सेंटर फार आर्ट्स, 2012, पृष्ठ 98–99, 156, 260
4. वाकंकर विष्णु श्रीधर, पेंटेड रॉक शेल्टरर्स ऑफ इण्डिया, डाइरेक्ट्रेट आर्काइव्स एण्ड म्यूजियम्स, गवर्नमेंट ऑफ मध्य प्रदेश, भोपाल, 2005, पृष्ठ 302–304

5. न्यूमेयर इरविन, लाइन्स आन स्टोन, मनोहर पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीव्यूटर्स, दिल्ली, 1993, पृष्ठ 31; डी0 पी0 तिवारी, ट्रेडिसनल मेथड ऑफ डेटिंग ऑफ रॉक आर्ट, इन ए सुन्दरा (एडिटर), प्री हिस्टॉरिक फाउण्डेशनस ऑफ भारत, पार्ट–2, दि मिथिक सोसाइटी, बेंगलूरू, 2021, पृष्ठ 587–596.